

## व्यास में जो होता है, अच्छे के लिए होता है...!!



डॉ. क. क. मिश्रा

जीवन में अक्सर ऐसा समय आता है जब मनुष्य खुद को कठिन परिस्थितियों से घिरा हुआ पाता है। काम में असफलता, रिश्तों में तनाव और घर परिवार की समस्याएं व्यक्ति को भीतर से थका देती हैं। ऐसे समय में लोग अक्सर एक बात कहकर दिलासा देते हैं - "जो होता है, अच्छे के लिए होता है।" कई लोग इसे श्रीकृष्ण या गौतम बुद्ध की शिक्षा मान लेते हैं। लेकिन यदि हम गहराई से देखें तो इन महापुरुषों की शिक्षा इससे कहीं अधिक गहरी और जागरूक करने वाली है।

श्रीकृष्ण ने भगवद् गीता में कहा - "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" अर्थात् मनुष्य का अधिकार केवल कर्म करने पर है, फल पर नहीं। श्रीकृष्ण का यह संदेश हमें जीवन की एक महत्वपूर्ण सच्चाई से परिचित कराता है कि हमें अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए, न कि उसके परिणाम पर अत्यधिक चिंतित होना चाहिए। अक्सर मनुष्य हर काम इसलिए करता है कि उसे सफलता, सम्मान या सुख प्राप्त हो। इसी कारण उसका मन भविष्य की कल्पनाओं में उलझ जाता है। लेकिन वास्तविक जीवन तो केवल वर्तमान क्षण में ही जीया जा सकता है।

इसी प्रकार बुद्ध की शिक्षाएं भी जीवन को जागरूकता के साथ देखने की प्रेरणा देती हैं। बुद्ध ने सबसे पहले यह स्वीकार किया कि जीवन में दुःख है, लेकिन उन्होंने यह भी बताया कि यह दुःख स्थायी नहीं है। उन्होंने "अनित्य" का सिद्धान्त दिया, जिसका अर्थ है कि इस संसार में सब कुछ परिवर्तनशील है। सुख और दुःख दोनों ही समय के साथ बदलते रहते हैं। आज जो परिस्थिति हमें बहुत कठिन लगती है, वही भविष्य में साधारण लग सकती है।

जीवन में घटनाओं को समझने के लिए धैर्य और समय दोनों आवश्यक हैं। इस संदर्भ में एक प्रसिद्ध कहानी बताई जाती है। चीन के एक गाँव में एक बूढ़ा किसान रहता था। उसके पास एक घोड़ा था जो एक दिन भाग गया। गाँव वालों ने कहा कि यह बहुत बुरा हुआ, लेकिन किसान ने शांत भाव से कहा - "कौन जानता है, अच्छा या बुरा।" बाद में किसान का बेटा घोड़े से गिरकर घायल हो गया, जिसे लोग दुर्भाग्य मान रहे थे। लेकिन कुछ समय बाद युद्ध छिड़ गया और गाँव के सभी युवकों को सेना में ले जाया गया, जबकि किसान का बेटा घायल होने के कारण बच गया। यह कहानी हमें सिखाती है कि जीवन की किसी भी घटना का अंतिम अर्थ तुरंत समझ में नहीं आता। समय के साथ परिस्थितियों का अर्थ बदल सकता है। इसलिए हर घटना को तुरंत अच्छा या बुरा कह देना उचित नहीं है। जीवन को समझने का सही मार्ग यही है कि हम कर्म करते रहें और साथ ही जागरूक भी रहें। कृष्ण का संदेश हमें कर्म के प्रति समर्पित बनाता है और बुद्ध का मार्ग हमें सजगता की ओर ले जाता है। जब मनुष्य कर्म और जागरूकता दोनों को अपनाता है, तब वह जीवन की हर परिस्थिति में संतुलन और शांति का अनुभव कर सकता है। यही जीवन को समझने की सच्ची दृष्टि है।

हम सबकी साधना व योग क्या है? एक बाबा को अपना संसार बना लेना, उनके साथ अपने सर्व सम्बन्ध जोड़ना, यही हमारी सच्ची साधना है, क्योंकि जितना सम्बन्ध समीप का होता है उतना उसकी याद स्वतः रहती है। हमारा बाबा सर्व सम्बन्ध निभाने वाला है, बाबा से हमें अनेकानेक प्राप्तियां हुई हैं, उन सबका अनुभव है। तो साधना अर्थात् एक बाबा की याद और उस साधना में एकाग्रता।

भक्ति मार्ग में भक्त लोग भिन्न-भिन्न रूप से साधना करते हैं। जब तक वो अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते, दर्शन नहीं हो जाते तब तक एक टांग पर ही खड़े रहेंगे व हठयोग की साधना करते रहेंगे। यहाँ तो ऐसे हठयोग की, एक टांग पर खड़े होने की बात नहीं है, हम तो अपने मन-बुद्धि को एक में लगाते हैं- यही हमारी साधना है।

साधना शब्द का अर्थ है एकाग्रता, उसमें जरा भी हलचल न हो। जहाँ एकाग्रता होती है वहाँ जिस स्थिति का अनुभव करना चाहते हैं, वह चाहना एकाग्रता के बल से पूर्ण हो जाती है। जैसे परमपाम में हम मन-बुद्धि द्वारा एक संकल्प में पहुँच तो जाते हैं परन्तु उसमें सदैव एकाग्रता हो अर्थात् एकरस अवस्था हो और हमेशा उसी का अनुभव होता रहे। समझो, अभी आत्मा अशरीरी बनकर परमपाम में बाबा के साथ पहुँच गई, स्थिति वह हो गई फिर कोई भी व्यर्थ संकल्प या कोई काम का संकल्प भी न आये, कोई भी हलचल आकर्षित न करे, यही है सच्ची साधना। अगर एकाग्रता हिल जाती है तो वह साधना नहीं है। साधना का अर्थ ही है एक ही स्थिति में एकाग्र हो, जितना समय चाहे

उतना समय हम उस स्थिति में स्थित हो जाएं।

एक होता है पुरुषार्थ करना, जैसे हमने याद किया बाबा, मैं अशरीरी आत्मा हूँ। बाबा जैसे आप हो वैसे मैं भी आत्मा ज्योति हूँ, मैं भी परमपाम निवासी हूँ, अपने घर में बाबा आपसे मिलने आ रही हूँ संकल्प से ऐसा पुरुषार्थ करते हैं लेकिन जब साधना की स्थिति होती है तो उसमें पुरुषार्थ खत्म हो जाता है और उसी स्थिति में स्थित हो जाते हैं। हिलते-डुलते नहीं हैं और जितना समय हम चाहें उतना समय हम बाबा की याद में खो जाएं। ऐसी पाँवरपुल साधना हो जो हम अपने मन को एकाग्र करके उसमें टिक सके।

कभी-कभी हमारी रुचि होती है सूक्ष्मवतन में बड़ा बाबा, शिवबाबा से अत्यंत रूप में मुलाकात करे, तो वहाँ भी हलचल नहीं है, एकाग्रता है। एकाग्रता से मन को ऐसा स्थित करो जो मन हलचल में न आये। ऐसी साधना ही कर्मातीत अवस्था की निशानी है। जिस लक्ष्य से हम योग करने के लिए बैठें, उस समय सेवा का संकल्प भी न आये, ऐसी कन्ट्रोलिंग पाँवर हो। तो साधना का अर्थ है एकाग्रता से उस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहना।

साधना में कोई भी साधन अपनी ओर खींचे नहीं। साधन, साधना को हिलावे नहीं। साधन युक्त तो करना है लेकिन हमारा मन खींचे नहीं। जैसे कमल पुष्प कीचड़, पानी में रहता है लेकिन पानी की एक बुँद भी उसको स्पर्श नहीं करती है। ऐसे साधनों को युक्त करने के लिए कोई मना नहीं है लेकिन साधन हमारी स्थिति को नीचे-ऊपर न करे।

यह बेहद की यूनिवर्सिटी है, जिस यूनिवर्सिटी में पढ़ाने वाला प्रोफेसर, सुप्रीम टीचर परमात्मा है। भले ये प्यारे सुप्रीम फादर का घर भी है परन्तु साथ-साथ यूनिवर्सिटी भी है तो आप



राजवोगिनी दादी प्रद्युम्न जी

## दिव्य बुद्धि अर्थात् जो राइट और रॉन्ग की जजमेंट करे

सभी इस समय गॉडली स्ट्रेंट बन कर सुप्रीम टीचर द्वारा इस ज्ञानयोग की पढ़ाई पढ़ रहे हो। इस पढ़ाई से लाइफ के लिए सच्ची राह मिल जाती है, जिस राह से रुह को रहत मिलती है। ये नॉलेज हमें राइट और रॉन्ग की बुद्धि देती है। दिव्य बुद्धि अर्थात् जो राइट और रॉन्ग की जजमेंट करे। आज मनुष्य की बुद्धि राइट और रॉन्ग की ही जजमेंट करने में असमर्थ है। अपनी-अपनी मत से एक कहना ये राइट है, दूसरा कहना कि ये रॉन्ग है, राइट को रॉन्ग कर देते, रॉन्ग को राइट कर देते हैं। लेकिन ये नॉलेज जो वास्तविक सत्य है उसी सत्यता का फौरन जजमेंट देती है। कैसा भी कर्म करते हैं, कैसी भी चाल-चलन कोई चले, राइट-रॉन्ग की जजमेंट

मिलती है। जैसे हंस खीर और मीर दोनों को अलग कर लेता। रत्न चुग लेता है, कंकड़ छोड़ देता है। तो यह नॉलेज हमको हंस बनाती है। राइट रॉन्ग को यथार्थ पहचान देती है। दृष्टि, वृत्ति में स्वयं को और औरों को फील होता है कि ये जिस दृष्टि से देखता है वह रहानियत से देखता, प्रेम से देखता, सद्भावना से देखता या इसकी दृष्टि, वृत्ति कैसी है? यदि अपवित्रता की दृष्टि होगी तो भी अन्दर रियलाइज होगा। यदि किसी के लिए नफरत होगी तो भी उनकी दृष्टि से मालूम हो

है। यह सब नॉलेज से रियलाइज हो जाता है। यदि अन्दर से कुछ और भावना हो और बाहर से दिखावटी भावना हो - तो भी फील होगा। दिल से हम किसको कितना लव देते हैं या कॉमन रूप से लव रखते हैं- इन दोनों का अन्दर वह नॉलेज ही स्पष्ट करती है। इसीलिए ये नॉलेज हमको हरेक बात में निर्णय शक्ति देती है। तो आत्मिक स्मृति और परमात्म स्मृति का यही आधार है। क्योंकि बुद्धि के क्लियर होने से ही स्मृति पाँवरपुस्त होती जाती है - ये दो सम्बन्ध (ज्ञान और योग) जीवन के मूल आधार हैं। जितना-जितना इसकी गहराई में जाते हैं, स्टडी करते हैं, कॉन्शियस में रहते हैं उतना दैवी गुणों की धारणा होती है, सूक्ष्म संस्कार परिवर्तन होते हैं क्योंकि रियलाइजेशन की शक्ति आ जाती है। अतः सबसे पहले यह नॉलेज खुद को बहुत फायदा देती है।

आज प्रत्येक मनुष्य जीवन में अपनी-अपनी समस्याओं में उलझा रहता है। कभी तबियत ठीक नहीं होगी तो प्रॉब्लम, परिवार की समस्या आई तो प्रॉब्लम, आपसों कोई बात हुई तो भी प्रॉब्लम, जिसकी लाइफ में जितनी प्रॉब्लम आती, उतना वह मनुष्य मुँहासा रहता है। कद्यों को लाइफ ऐसा है - ठीक है चल रहे हैं, उदास है, मुँहे हुए हैं, उनको अपनी लाइफ की कैल्यू नहीं, लाइफ का कोई हल नहीं है, कोई ऊंचा आदर्श नहीं, कोई उम्मीद नहीं। लेकिन यह ज्ञान हमें जीवन को हर प्रॉब्लम का हल देता है। इसलिए आप लोग जितना-जितना इस ज्ञान-योग की स्टडी करते जायेंगे उतनी सफलता मिलती जायेगी। जैसे वैज्ञानिक खूब स्टडी करते, नई-नई खोजें करते, सफल होते जाते, अनेक साधन तैयार करते जाते, तो जितनी उसकी गहराई है उतनी इस साइलेंस की शक्ति व योग की शक्ति को भी गहराई है। वह बहुत बड़ी शक्ति है, इस शक्ति के आधार से हम अपनी जीवन को जैसा दिव्य बनाना चाहें वैसा बना सकते हैं।

## फॉलोअर नहीं, हम बाबा को फॉलो करने वाले हैं

यदि अच्छी तब खेगी जब हर बात में बाबा को फॉलो करने की लगन होगी। भक्ति में तो सिर्फ फॉलोअर कहने मात्र होते हैं क्योंकि फॉलो कर्ही करते हैं। सिर्फ गुरु में भावना होती है, बस। अनेक गुरु करने के बजाए एक को गुरु मान करके उसी में भावना रखते हैं। लेकिन यहाँ हमारी एक बाबा में भावना भी है तो विश्वास भी है।

हम सबको पहले खुद में निश्चय हुआ, फिर बाप में, ड्रामा में, निश्चयबुद्धि बनें, इसी निश्चय से विजयी बने हैं। संगम पर हमारा हीरो-हीरोइन पार्ट है। सारे कल्प में हम ऊंचा फर्ट बजाने वाली आत्मा हैं, यह बुद्धि में न सिर्फ सम्झा है पर दिल से मान लिया है। तो उसका अन्दर से अनुभव होने लगता है, निश्चय ने अनुभव करा लिया है तो भावना बैठ गई है। निश्चय सम्झा से हुआ है इसलिए कोई संशय उठता ही नहीं है।

चेक करो खुद में, बाप में या ड्रामा में या कोई भी बात में कभी क्वेश्चन मार्क तो नहीं उठता कि यह क्यों, यह क्या... ज्ञाय, क्याट, केन... इन सबमें डब्ल्यू लिखना बड़ा डिफिकल्ट है। एक बाबा दूसरा विक्ट्री (विजयी) जो इन दो बातों को समझ जाता है वो होली और योगी बन जाता है।

हम सब आत्माएं भाई-भाई हैं और ब्राह्मण भाई-बहन हैं तो दुष्ट एकदम आत्मा की तरफ जाती है। परमात्मा मेरा बाप है, हम सब उसके ही बच्चे हैं। जब हमारी दुष्ट भाई-भाई की बन जाती है, तो अशरीरी स्थिति भी सहज बन जाती है। अगर आत्मा की दुष्ट से नहीं देखेंगे तो रुह में रुहानियत की खुशबू नहीं आ सकेगी।

बाबा हमें कर्म से जो गुण सिखाता है वह गुण औरों को भी बाबा की तरफ खींचते हैं। वच्चा है, बूढ़ा है सिर्फ मुसकुरा के कोई पानी का गिलास भी देवे तो कितना अच्छा लगेगा और बिना मुसकुराये कोई खाना भी देवे तो इतना अच्छा नहीं लगेगा। तो सदा यह नशा रहे कि हम किसके साथ रहते हैं? मेरे को कौन पढ़ाता है? बाबा तो बहुत अच्छा है, हमें बाबा अच्छा लगता है पर बाबा को अच्छा कौन लगेगा? जो अच्छा पड़ेगा।

सबसे अमृतवले बाप है, क्लास के समय टीचर है। सेवा के समय हमारा योग कैसा हो वह भी बाबा हमें बताता है। सुबह अमृतवले उठना कैसे, बैठना कैसे... वो भी सिखाता है। उस घड़ी कुछ नहीं कहता है, पर अपनी अकर्मण्य से खींचता है। टीचर खींचता नहीं है, बाबा खींचता है।

पढ़ाई में कितना बार मीठे बच्चे, मीठे बच्चे कह करके अन्दर से सारा कड़वापन निकाल देता है। ब्राह्मण कुल की शोभा बढ़ाने वाले स्वदर्शन चक्रधारी बच्चे बनते हैं। पढ़ाने वाला जैसे पढ़ा रहा है, वैसे ध्यान दे करके पढ़ना है। श्रीमत को अच्छी तरह से जानकर, मानकर उस पर चलना है। कभी मनमत नहीं चलानी है। इसमें अपना भाव-स्वभाव, संस्कार काम नहीं करे। तो बाबा देखकर खुश होगा कि यह बच्चा अच्छा पढ़ता है। अच्छा पढ़ने वाले बच्चे को बाप अपनी गोद में बिठाता है।

किसी में रुसने की आदत है तो यह सबसे बुरी आदत है। जो आपस में अपने बहन-भाई से रुसते या किसी से भी रुसते हैं तो वो एक दिन बाबा से भी रुसने लग पड़ते हैं क्योंकि आदत पड़ गई। कई हैं जो खुद जब बच्चे थे तो लड़ते थे, जब बच्चे पैदा किये तो भी लड़ रहे हैं। बाबा हमारी वह सब आदतें चेंज करता है। स्वदर्शनचक्र धमाओ तो पहले को सब आदतें बदल जायेंगी और तुम बदलोगे तो चैरिटी बिगन्स एट होम, आपे ही घर वाले चेंज हो जाते हैं। कई बार घर वालों को चेंज करने में थोड़ा टाइम लगता है क्योंकि हिमाब-किताना होता है। कोई अच्छा मानेंगे, कोई बुरा मानेंगे पर बाहर वाले बदलाव देखकर जब अच्छा कहते हैं तब घर वाले पीछे जाते हैं, यह भी कद्यों का मिसाल है।



राजवोगिनी दादी प्रद्युम्न जी